# वैश्विक–मानक संस्थाओं का विकास : एन0ई0पी0 2020 के सन्दर्भ में

**डॉ0 मनिक मोहन शुक्ल**[1]
**विभागाध्यक्ष, बी0एड्0 विभाग, अनुग्रह मेमोरियल कॉलेज, बोधगया, बिहार।**

**सारांश**

वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति, विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा ने वैश्विक शिक्षा प्रणाली को नए आयाम दिए हैं, जिसके परिणामस्वरूप भारतीय शिक्षा में वैश्विक–मानक संस्थाओं की आवश्यकता और महत्व अत्यधिक बढ़ गया है। ऐसी संस्थाएँ न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और अनुसंधान प्रदान करती हैं, बल्कि आधुनिक अवसंरचना, प्रगतिशील प्रशासनिक प्रथाएँ, और नवाचारपूर्ण शिक्षण विधियों को भी अपनाती हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इस दिशा में एक दूरदर्शी नीति के रूप में सामने आई है, जो भारत में विश्व–स्तरीय संस्थानों के निर्माण और विकास पर विशेष बल देती है।

NEP 2020 का उद्देश्य केवल आधुनिक और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना नहीं है, बल्कि इसके साथ–साथ भारतीय सांस्कृतिक और ज्ञान परंपराओं, मूल्य–आधारित शिक्षा, और समग्र मानव विकास पर भी ध्यान केंद्रित करना है। नीति बहुविषयक शिक्षा, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, अनुसंधान और नवाचार, डिजिटल शिक्षा और तकनीकी एकीकरण, और सतत विकास जैसे प्रमुख पहलुओं पर जोर देती है।

यह शोधपत्र वैश्विक–मानक संस्थाओं के लक्षण, उनके रणनीतिक ढांचे, विकास के लिए आवश्यक नीतिगत उपाय, संभावित चुनौतियाँ, और उपलब्ध अवसरों का विश्लेषण करता है। इसमें यह भी बताया गया है कि कैसे NEP 2020 के अंतर्गत बहुविषयक शिक्षा और वैश्विक सहयोग के माध्यम से भारत को एक ज्ञान–संचालित वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित किया जा सकता है।

निष्कर्ष स्वरूप कह सकते हैं कि कि वैश्विक–मानक संस्थाओं का निर्माण न केवल भारतीय शिक्षा की गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाएगा, बल्कि विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर पर सक्षम, नैतिक और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाने में भी सहायक होगा।

**मुख्य शब्द– वैश्विक–मानक संस्थाएँ, NEP 2020, अंतरराष्ट्रीयकरण, भारतीय ज्ञान प्रणाली, उच्च शिक्षा, शोध और नवाचार**

## परिचय

वैश्वीकरण ने उच्च शिक्षा के परिदृश्य को गहराई से बदल दिया है। आज की दुनिया में शिक्षा केवल राष्ट्रीय स्तर तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसे वैश्विक मानकों और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के अनुरूप होना आवश्यक हो गया है। इस बदलाव ने ऐसी संस्थाओं की आवश्यकता को बढ़ा दिया है, जो न केवल उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और शोध प्रदान करें, बल्कि आधुनिक अवसंरचना, उन्नत शिक्षण पद्धतियाँ और प्रशासनिक उत्कृष्टता भी सुनिश्चित करें।

वैश्विक–मानक संस्थाएँ बहुविषयक शिक्षा, शोध और नवाचार के अवसर प्रदान करती हैं। ये संस्थाएँ वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाते हुए स्थानीय सांस्कृतिक, नैतिक और सामाजिक मूल्यों को संरक्षित करती हैं। इस प्रकार, छात्रों को न केवल ज्ञान और कौशल में प्रवीण बनाया जाता है, बल्कि उन्हें सामाजिक रूप से जिम्मेदार और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी नागरिक के रूप में भी तैयार किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 इस आवश्यकता को स्पष्ट रूप से मानती है और भारत में विश्व–स्तरीय विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के निर्माण पर विशेष बल देती है। नीति का उद्देश्य है कि भारत वैश्विक प्रतिस्पर्धा में सक्षम बने, अंतरराष्ट्रीय

छात्रों और विद्वानों को आकर्षित कर सके, और एक ज्ञान–आधारित अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे सके। NEP 2020 बहुविषयक दृष्टिकोण, अनुसंधान और नवाचार, डिजिटल शिक्षा, तकनीकी एकीकरण, और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर जोर देती है।

नीति के तहत शिक्षा संस्थानों को विश्व–स्तरीय बनने के लिए कई प्रमुख उपाय सुझाए गए हैं, जैसे कि बहुविषयक पाठ्यक्रम का विकास, शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित करना, शिक्षक क्षमता निर्माण, डिजिटल शिक्षण के संसाधनों का समुचित उपयोग और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना। इन उपायों के माध्यम से भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली को न केवल वैश्विक प्रतिस्पर्धा के अनुरूप तैयार किया जा रहा है, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक और ज्ञान परंपराओं का संरक्षण भी सुनिश्चित किया जा रहा है।

इस प्रकार, वैश्विक–मानक संस्थाओं का विकास केवल उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय विकास, अंतरराष्ट्रीय पहचान और ज्ञान–संचालित अर्थव्यवस्था के निर्माण में भी सहायक है। NEP 2020 के दिशा–निर्देश इस दिशा में स्पष्ट और दूरदर्शी रूपरेखा प्रदान करते हैं।

**वैश्विक–मानक संस्थाओं के लक्षण**

वैश्विक–मानक संस्थाएँ निम्नलिखित विशेषताओं से पहचानी जाती हैं–

1. **बहुविषयक और समग्र शिक्षा**– कला, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यावसायिक शिक्षा को एकीकृत करके छात्रों में अंतरविषयक कौशल विकसित करना।
2. **उच्च–गुणवत्ता वाले शिक्षक और नेतृत्व**– अंतरराष्ट्रीय अनुभव वाले योग्य शिक्षक और नेतृत्व विकास कार्यक्रम।
3. **आधुनिक अवसंरचना**– स्मार्ट क्लासरूम, प्रयोगशालाएँ, डिजिटल पुस्तकालय और अत्याधुनिक संसाधन।
4. **शोध और नवाचार केंद्र**– उद्योग और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के साथ अनुसंधान, नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहित करना।
5. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग**– विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ भागीदारी, छात्र और शिक्षक विनिमय, और संयुक्त पाठ्यक्रम विकास।
6. **वैश्विक मान्यता**– अंतरराष्ट्रीय मान्यता और मानक के अनुसार गुणवत्ता सुनिश्चित करना।
7. **भारतीय ज्ञान प्रणाली का समावेश**– भारतीय दर्शन, संस्कृति और परंपराओं को शिक्षा में शामिल करना।
8. **डिजिटल और ऑनलाइन शिक्षा**– ई–लर्निंग, वर्चुअल लैब और डिजिटल पुस्तकालयों का उपयोग।
9. **छात्र–केंद्रित शिक्षण**– अनुभवात्मक, दक्षता–आधारित और समग्र विकास पर जोर।
10. **सतत विकास और सामाजिक जिम्मेदारी**– नैतिक प्रथाओं, पर्यावरणीय स्थिरता और समाज सेवा को संस्थागत गतिविधियों में शामिल करना।

**NEP 2020 के तहत रणनीतिक ढांचा**

वैश्विक प्रतिस्पर्धा और उच्च शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए संस्थानों का रणनीतिक रूप से पुनर्गठन आवश्यक है। NEP 2020 इस दिशा में स्पष्ट ढांचा प्रस्तुत करती है, जिसमें बहुविषयक शिक्षा, शोध एवं नवाचार, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, तकनीकी एकीकरण और गुणवत्ता आश्वासन पर विशेष बल दिया गया है। इस ढांचे का उद्देश्य भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी, पेशेवर और ज्ञान–संचालित बनाना है।

1. **संस्थानिक पुनर्गठन**

   स्वतंत्र महाविद्यालयों का एकीकरण कर बहुविषयक विश्वविद्यालयों का निर्माण किया जाएगा। इसका उद्देश्य संसाधनों का कुशल उपयोग, बहुविषयक शिक्षा का विकास और विद्यार्थियों को व्यापक अध्ययन के अवसर प्रदान करना है।

2. **शोध और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र**

अनुसंधान पार्क, इनक्यूबेटर और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के माध्यम से संस्थानों में शोध और नवाचार को प्रोत्साहित किया जाएगा। यह कदम उच्च शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने और नए ज्ञान का सृजन सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है।

3. **क्षमता निर्माण**
   शिक्षक, प्रशासनिक और अन्य कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। यह सुनिश्चित करेगा कि सभी शैक्षणिक और प्रशासनिक कर्मी आधुनिक शिक्षण पद्धतियों, तकनीकी उपकरणों और नवाचारों के साथ दक्ष हों।
4. **अंतरराष्ट्रीयकरण**
   शीर्ष वैश्विक विश्वविद्यालयों के साथ भागीदारी और सहयोग को बढ़ावा दिया जाएगा। इससे न केवल भारतीय संस्थानों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप तैयार किया जा सकेगा, बल्कि छात्रों और शिक्षकों को वैश्विक अनुभव और नेटवर्किंग के अवसर भी मिलेंगे।
5. **तकनीकी एकीकरण**
   डिजिटल कक्षाओं, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और ई–शिक्षण संसाधनों के उपयोग से शिक्षण और अधिगम प्रक्रिया को आधुनिक और सुलभ बनाया जाएगा। यह कदम शिक्षा को समय और स्थान की सीमाओं से मुक्त करने में सहायक होगा।
6. **गुणवत्ता सुनिश्चित करना**
   आंतरिक और बाहरी गुणवत्ता आश्वासन, मान्यता और अंतरराष्ट्रीय मानकों को अपनाकर संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित की जाएगी। इससे छात्रों को विश्वसनीय और मान्यता प्राप्त डिग्रियाँ प्राप्त होंगी।

इस प्रकार प्रस्तुत रणनीतिक ढांचा भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों को वैश्विक मानकों के अनुरूप तैयार करने, शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित करने, शिक्षक और प्रशासनिक क्षमता बढ़ाने, तकनीकी एकीकरण करने और गुणवत्ता सुनिश्चित करने में मार्गदर्शन करता है। NEP 2020 के तहत यह ढांचा भारत को शिक्षा और ज्ञान–सृजन के क्षेत्र में वैश्विक नेतृत्व प्रदान करने की दिशा में एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

**वैश्विक–मानक संस्थाओं के विकास में चुनौतियाँ**

वैश्विक–मानक संस्थाओं के निर्माण और विकास के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, शोध और प्रशासनिक दक्षता आवश्यक है। हालांकि, इस दिशा में कई चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, जिन्हें पहचानना और उनका समाधान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

1. **संसाधन सीमाएँ**
   आधुनिक अवसंरचना, अत्याधुनिक प्रयोगशालाएँ, डिजिटल कक्षाएँ और शोध सुविधाओं के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधनों की आवश्यकता होती है। संसाधनों की कमी संस्थागत विकास को धीमा कर सकती है।
2. **शिक्षक और शोधकर्ता की कमी**
   योग्य और अनुभवी शिक्षक तथा शोधकर्ताओं की कमी, वैश्विक स्तर की शिक्षा और अनुसंधान गतिविधियों को प्रभावित करती है। संस्थानों को विशेषज्ञ कर्मचारियों की भर्ती और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।
3. **परंपरागत प्रतिरोध**
   पारंपरिक शिक्षण और प्रशासनिक पद्धतियों में बदलाव के प्रति प्रतिरोध, नवाचार और आधुनिक शिक्षा नीतियों के कार्यान्वयन में बाधा डाल सकता है।
4. **नीति और शासन**
   प्रभावी नीति कार्यान्वयन, संस्थागत स्वायत्तता और शासन संरचना की कमी, संस्थाओं के विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में बाधा उत्पन्न करती है।
5. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा**

अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों से छात्रों, शिक्षकों और निवेश के लिए तीव्र प्रतिस्पर्धा, भारतीय संस्थानों के लिए चुनौतियाँ पैदा करती है। उच्च गुणवत्ता और वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षा प्रदान करना आवश्यक है।

इन चुनौतियों को पहचानकर और रणनीतिक उपायों के माध्यम से उनका समाधान करके ही भारत में वैश्विक–मानक संस्थाओं का सफल विकास संभव है। संसाधन सृजन, क्षमता निर्माण, नीति सुधार और अंतरराष्ट्रीय सहयोग इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

**अवसर और लाभ**

वैश्विक–मानक संस्थाओं के विकास के साथ कई अवसर और लाभ जुड़े हैं, जो न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाते हैं बल्कि राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की प्रतिष्ठा को भी सुदृढ़ करते हैं।

1. **भारत को वैश्विक ज्ञान केंद्र के रूप में स्थापित करना**
   उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा, शोध और नवाचार के माध्यम से भारत को वैश्विक ज्ञान–संचालित अर्थव्यवस्था में एक अग्रणी केंद्र के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
2. **अंतरराष्ट्रीय स्तर के योग्य स्नातक तैयार करना**

वैश्विक–मानक संस्थाओं में बहुविषयक और अंतरराष्ट्रीय शिक्षा के अवसरों के माध्यम से विद्यार्थी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार होते हैं।

3. **बहुविषयक शोध और नवाचार को बढ़ावा देना**
   संस्थाओं में अनुसंधान पार्क, इनक्यूबेटर और अंतरराष्ट्रीय सहयोग से बहुविषयक शोध एवं नवाचार को प्रोत्साहित किया जाता है।
4. **अंतरराष्ट्रीय छात्रों और विद्वानों को आकर्षित करना**
   वैश्विक मानकों के अनुरूप शिक्षा और आधुनिक संसाधनों के कारण भारत के विश्वविद्यालय अंतरराष्ट्रीय छात्रों और विद्वानों के लिए आकर्षण का केंद्र बन सकते हैं।
5. **वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ भारतीय सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों को बनाए रखना**
   वैश्विक शिक्षा के साथ–साथ भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्य संरक्षित रहते हैं, जिससे शिक्षा का संतुलित और समग्र विकास सुनिश्चित होता है।

इन अवसरों और लाभों का प्रभावी उपयोग करके भारत न केवल शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक प्रतिस्पर्धा में आगे बढ़ सकता है, बल्कि राष्ट्रीय पहचान, सांस्कृतिक मूल्यों और अनुसंधान क्षमता को भी सुदृढ़ कर सकता है।

**6. निष्कर्ष**

वैश्विक–मानक संस्थाओं का विकास आज भारत के उच्च शिक्षा परिदृश्य में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय शिक्षा प्रणाली को न केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षण प्रदान करना है, बल्कि छात्रों और शोधकर्ताओं को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने की आवश्यकता भी है। इस संदर्भ में NEP 2020 एक स्पष्ट और दूरदर्शी रणनीति प्रस्तुत करती है, जो बहुविषयक शिक्षा, शोध और नवाचार, अंतरराष्ट्रीय सहयोग, डिजिटल शिक्षण और सांस्कृतिक मूल्यों के संतुलन पर आधारित है। नीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि भारतीय संस्थान उच्च शिक्षा के क्षेत्र में वैश्विक मानकों के अनुरूप तैयार हों, और छात्रों को आवश्यक कौशल, ज्ञान और नवाचार की क्षमता प्रदान की जा सके।

नीति के कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ मौजूद हैं, जैसे संसाधनों की सीमाएँ, योग्य शिक्षक और शोधकर्ताओं की कमी, पारंपरिक शिक्षण और प्रशासनिक पद्धतियों में प्रतिरोध, नीति और शासन से जुड़े मुद्दे और वैश्विक प्रतिस्पर्धा। इन चुनौतियों के बावजूद, NEP 2020 के माध्यम से प्रस्तावित बहुविषयक दृष्टिकोण, शोध और नवाचार को बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग और

डिजिटल संसाधनों का समुचित उपयोग, भारतीय उच्च शिक्षा को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक साबित हो सकते हैं।

साथ ही, नीति भारतीय सांस्कृतिक, नैतिक और ज्ञान परंपराओं को संरक्षित रखते हुए वैश्विक शिक्षा के सर्वोत्तम प्रथाओं को अपनाने पर बल देती है। इसका अर्थ यह है कि छात्र और शिक्षक न केवल तकनीकी और अकादमिक दक्षता में प्रवीण होंगे, बल्कि वे अपनी सांस्कृतिक पहचान और मूल्यों को भी बनाए रखेंगे। इस संतुलित दृष्टिकोण से भारत न केवल विश्व–स्तरीय संस्थानों का निर्माण कर सकेगा, बल्कि ज्ञान–संचालित अर्थव्यवस्था में योगदान करने के लिए सक्षम और जिम्मेदार वैश्विक नागरिक तैयार कर सकेगा।

अतः यह कहा जा सकता है कि वैश्विक–मानक संस्थाओं का विकास और NEP 2020 के तहत उनकी रणनीतिक रूपरेखा, भारत को उच्च शिक्षा में वैश्विक नेतृत्व दिलाने, अंतरराष्ट्रीय छात्रों और शोधकर्ताओं को आकर्षित करने और राष्ट्रीय तथा वैश्विक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करने में निर्णायक भूमिका निभाएगी।

**सुझाव और रणनीतियाँ**

वैश्विक–मानक संस्थाओं के विकास के लिए केवल नीति का होना पर्याप्त नहीं हैय इसे प्रभावी ढंग से कार्यान्वित करना आवश्यक है। इसके लिए निम्न रणनीतिक उपाय और समर्थनकारी कदम उठाना अनिवार्य हैं।

1. **अंतरराष्ट्रीय सहयोग को मजबूत करना**
   शीर्ष वैश्विक विश्वविद्यालयों और संस्थानों के साथ भागीदारी, संयुक्त शोध, पाठ्यक्रम विकास और शिक्षकधविद्यार्थी विनिमय कार्यक्रम बढ़ाने चाहिए।
2. **शिक्षक और शोधकर्ता क्षमता निर्माण**
   नियमित प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ और पेशेवर विकास कार्यक्रम आयोजित करके शिक्षकों और शोधकर्ताओं की वैश्विक कौशल क्षमता बढ़ाई जानी चाहिए।
3. **अनुसंधान और नवाचार को प्रोत्साहित करना**
   संस्थानों में अनुसंधान पार्क, इनक्यूबेटर और प्रयोगात्मक परियोजनाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। इससे बहुविषयक और नवाचार–आधारित शिक्षा सुनिश्चित होगी।
4. **डिजिटल शिक्षा और तकनीकी अपनाना**
   ई–शिक्षण संसाधनों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों और डिजिटल कक्षाओं का व्यापक उपयोग किया जाना चाहिए। यह शिक्षा को समय और स्थान की बाधाओं से मुक्त करने में सहायक होगा।
5. **नीति और प्रशासनिक सुधार**
   प्रभावी नीति कार्यान्वयन और संस्थागत स्वायत्तता सुनिश्चित करनी चाहिए। इससे निर्णय लेने की गति बढ़ेगी और संस्थानों की गुणवत्ता में सुधार होगा।
6. **संसाधन और वित्तीय समर्थन**
   आधुनिक अवसंरचना, प्रयोगशालाएँ और शोध सुविधाओं के लिए पर्याप्त वित्तीय संसाधन उपलब्ध कराए जाने चाहिए।
7. **भारतीय सांस्कृतिक और ज्ञान मूल्यों का समन्वय**
   वैश्विक शिक्षा के साथ भारतीय ज्ञान प्रणाली, सांस्कृतिक विरासत और नैतिक मूल्यों को बनाए रखना आवश्यक है, ताकि शिक्षा का संतुलित विकास सुनिश्चित हो।

इन सुझावों और रणनीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन से भारत में वैश्विक–मानक संस्थाओं का निर्माण और संचालन संभव होगा। यह कदम न केवल शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाएगा, बल्कि छात्रों, शिक्षकों और शोधकर्ताओं के वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मक कौशल को भी सुदृढ़ करेगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ :**

1. भारत सरकार, (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।

2. राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (NCTE), (2021), शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम ढांचा। नई दिल्ली– NCTE।
3. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)। (2023)। विद्यालय शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढांचा, नई दिल्ली– NCERT।
4. यूनेस्को, (2015), वैश्विक नागरिक शिक्षा– 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए शिक्षार्थियों की तैयारी। पेरिस– यूनेस्को।
5. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, (2021), NEP 2020 कार्यान्वयन दिशानिर्देश– शिक्षक शिक्षा, नई दिल्ली।
6. राव, के. एल, (2021), भारत में शिक्षक शिक्षा, NEP 2020 के तहत चुनौतियाँ और अवसर। नई दिल्ली– सेज पब्लिकेशन।
7. तिलक, जे. बी. जी, (2020), भारत में शिक्षा और विकासरू नीति और अभ्यास, नई दिल्ली– ओरिएंट ब्लैकस्वान।
8. शर्मा, आर., एवं सिंह, पी, (2022), वैश्विक दक्षता और शिक्षक शिक्षा– भारतीय ज्ञान प्रणाली का समन्वय। अंतरराष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान पत्रिका, 10(2), 45–60।
9. चौधरी, एस, (2021), भारतीय शिक्षक शिक्षा का अंतरराष्ट्रीयकरण–NEP 2020 का दृष्टिकोण, शिक्षक शिक्षा और अनुसंधान पत्रिका, 16(1), 12–28।
10. पाटिल, एम., एवं देशमुख, एस, (2021), शिक्षक शिक्षा में डिजिटल और समग्र शिक्षण–NEP 2020 दृष्टिकोण, शैक्षिक नवाचार पत्रिका, 8(3), 75–88।